



SHRI PARSHURAM VISHRAM GANGAVANE

Shri Parshuram Vishram Gangavane has been tenaciously preserving and promoting the traditional art forms of the Adivasi Thakar Tribe since 1975. His contribution to society through the conservation and promotion of his art form is unparalleled and he hopes to empower his community by nurturing the traditional art forms for future generations.

2. Born on 1st June, 1956, to the tribal family of Gangavanes in Kudal, Shri Gangavane has learnt over ten traditional arts from his father, Shri Vishram Gangavane. These include Chitrakathi, Kalsutri Bahulya, Leather Puppets, Pangul Bael, Powada, Gondhal, Radhanrutya, and six more traditional art forms of the Thakars.

3. Under Sh. Gangavane's leadership, the community at Pinguli set up a "Thakar Adivasi Kala Aangan" (TAKA) Museum & Art Gallery (2006) depicting the 500 Years old traditional objects and puppets of the Thakar culture and since has been visited by both local and foreign tourists. The Vishram Thakar Adivasi Kala Aangan Charitable Trust owns a museum and an art gallery at Pinguli, Maharashtra; incidentally this museum was built in Shri Parshuram's cow shed. Through this trust and the support of other like-minded artisans and his sons Eknath and Chetan, he has hosted many HIV Aids awareness, Beti Bachao, Vyasana Mukti, Swachh Bharat Abhiyan, Health Awareness programs, covid 19 awareness performances through Kalsutri Bahuli (String Puppets) in many villages of Maharashtra. Through the Kala Aangan Museum, he also promotes the tribal traditions amongst the Thakar youth who have currently moved to other fields and occupations.

4. Shri Gangavane was nominated as a Guru under the Guru Shishya Parampara, initiated by the Indian Ministry of Culture and has since conducted 8 Learning programs with over 150 graduates. He has also travelled in various states of India to perform String Puppetry & Chitrakathi in Government Cultural Festivals. He has additionally conducted and participated in more than 100 workshops across the country to promote and share the lessons about his tribal art.

5. Shri Gangavane is the recipient of numerous awards and honours that acknowledged his efforts in preserving folk traditions for the last four decades. He was honored with State Award for Nasha Bandhi Abhiyan awareness through String Puppetry. He was also honored with Sindhudurg Tourist Friend Award for his work to promote Cultural Tourism in Sindhudurg Tourism District.



श्री परशुराम विश्राम गंगावणे

श्री परशुराम विश्राम गंगावणे 1975 से आदिवासी ठाकर जनजाति के पारंपरिक कला रूपों का निष्ठा और लगन के साथ संरक्षण और संवर्धन कर रहे हैं। कला रूप के संरक्षण और संवर्धन के माध्यम से समाज में उनका योगदान अद्वितीय है और उनकी अभिलाषा भावी पीढ़ियों के लिए पारंपरिक कला रूपों को सहेजकर अपने समुदाय को सबल बनाना है।

2. 1 जून, 1956 को कुडल में गंगावणे जनजाति परिवार में जन्मे श्री गंगावणे ने अपने पिता श्री विश्राम गंगावणे से दस से अधिक पारंपरिक कलाएं सीखीं। इनमें चित्रकथी, कालसूत्री बाहुल्य, चमड़ा कठपुतलियां, पंगुल बाएल, पोवाड़ा, गोंधाल, रधनरुत्या और ठाकर जनजाति के छह और पारंपरिक कला रूप शामिल हैं।

3. श्री गंगावणे के नेतृत्व में, समुदाय ने पिंगुली में ठाकर संस्कृति की 500 वर्ष पुरानी पारंपरिक वस्तुओं और कठपुतलियों को दर्शाते हुए "ठाकर आदिवासी कला आंगन" संग्रहालय और कला दीर्घा (2006) की स्थापना की और तभी से स्थानीय और विदेशी दोनों पर्यटक इसे देखने के लिए आते रहते हैं। विश्राम ठाकर आदिवासी कला आंगन चैरिटेबल ट्रस्ट का महाराष्ट्र के पिंगुली में एक संग्रहालय और एक कला दीर्घा है। यह संग्रहालय श्री परशुराम की गोशाला में बनाया गया था। इस ट्रस्ट और अन्य समान विचारधारा वाले कारीगर और उनके बेटों एकनाथ और चेतन के सहयोग से उन्होंने महाराष्ट्र के कई गांवों में कालसूत्री बहूली (डोर कठपुतलियों) के माध्यम से कई एचआईवी एड्स जागरूकता कार्यक्रम, बेटी बचाओ, व्यसन मुक्ति, स्वच्छ भारत अभियान, स्वास्थ्य जागरूकता और कोविड-19 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है। कला आंगन संग्रहालय के माध्यम से, वह वर्तमान में अन्य क्षेत्रों और व्यवसायों की ओर मुड़ गए ठाकर युवाओं के बीच जनजातीय परंपराओं को भी प्रोत्साहन देते हैं।

4. श्री गंगावणे को संस्कृति मंत्रालय द्वारा शुरू की गई गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत गुरु के रूप में नामित किया गया था और तब से 150 से अधिक स्नातकों के लिए 8 शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों की भी यात्राएं की हैं और वहां आयोजित सरकारी सांस्कृतिक महोत्सवों में डोर कठपुतली और चित्रकथी का प्रदर्शन किया है। उन्होंने अपनी जनजातीय कला शिक्षा को बढ़ावा देने और उसे साझा करने के लिए देश भर में 100 से अधिक कार्यशालाओं का आयोजन किया है और उनमें भाग लिया है।

5. श्री गंगावणे को, पिछले चार दशकों से लोक परंपराओं के संरक्षण में उनके प्रयासों को मान्यता देते हुए कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। डोर कठपुतली के माध्यम से नशाबंदी अभियान जागरूकता के लिए उन्हें राज्य पुरस्कार की ओर से सम्मानित किया गया था। उन्हें सिंधुदुर्ग पर्यटन जिले में सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए सिंधुदुर्ग पर्यटक मित्र पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।